4. नीरीजा गोपाल जयाल, डेमोक्रेसी इन इंडिया, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यू दिल्ली, 2001
5. सतीश देशपांडे, कॉनटेमपररि इंडिया : सोशियोलॉजिक, न्यू, पेनग्यून, न्यू दिल्ली, 2003
6. पीटर डिसूजा, कंटेमपररि इंडिया, सेज पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली, 1999
7. सुदीप्त कविराज, पॉलिटिक्स इन इंडिया, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यू दिल्ली, 1997
8. सुनील खिलनानी, भारतनामा (आइडिया ऑफ इंडिया) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ. 107–109
9. रजनी कोठारी, भारत में राजनीति : कल और आज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005
10. घनश्याम शाह, कास्ट एण्ड डेमोक्रेटिक पॉलिटिक्स इन इंडिया, परमानेंट ब्लैक, न्यू दिल्ली, 2002, पृ. 219.
11. एम.एस.ए. राव, सोशल मूवमेंट्स इन इंडिया, मनोहर, न्यू दिल्ली, 1979
12. देखें घनश्याम शाह, पूर्वोक्त, पृ. 195–203
13. उपरोक्त
14. योगेन्द्र यादव, ''कायापलट की कहानी'', संकलित, अभय कुमार दुवे (सं) लोकतंत्र के सात अध्याय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002, पृ. 55
15. घनश्याम शाह, कास्ट एण्ड डेमोक्रेटिक पॉलिटिक्स इन इंडिया, परमानेंट ब्लैक, न्यू दिल्ली, 2002
16. क्रिस्टोफे जेफरेलॉट, इंडियाज साइलेंट रिवोल्यूशन : द राइज ऑफ लो कास्ट्स इन इंडियन पॉलिटिक्स, परमानेंट ब्लैक, न्यू दिल्ली, 2003, पृ. 380–381
17. रणवीर समदर एण्ड सुहित के.सेन, न्यू सवजेक्ट्स एण्ड न्यू गवर्नेंस इन इंडिया, रूटलेज, न्यू दिल्ली, 2012, पृ. 156–157.

□□□□

संगीत दर्पण में शिव मुख एवं शिवमत के राग

नमिता कुमारी*

दामोदर पंडित ने अपने ग्रन्थ 'संगीत दर्पण' के द्वितीय अध्याय 'रागाध्याय' में राग–रागिनियाँ ही मुख्य विषय हैं। सर्वप्रथम राग की सर्वप्रसिद्ध परिभाषा है, यथा–

योऽयं ध्वनिविशेषस्तुम स्वरकर्णविभूषितः।
रंजको जनचित्तानां स रागः कथितो बुधैः।।[1]
यह परिभाषा मतंगोक्त है।[2]

आगे, रागांग, भाषांग, क्रियांग, उपांग एवं कांडारणा के संदर्भ में जिस राग में ग्राम राग की छाया हो, वह 'रागांग', जिसमें भाषा राग की छाया हो वह 'भाषांग' जिससे इन्द्रियों में उत्साह हो, वह 'क्रियांग' तथा जिसमें राग की बहुत कम छाया हो, वह 'उपांग' कहलाता है। तारस्थान में अति द्रुत तानें, विभिन्न गमकों का कुशलतापूर्वक उपयोग 'कांडारणा' में होता है।

राग के संदर्भ में आगे ग्रन्थकार ने राग के तीन भेदों शुद्ध, छायालग तथा संकीर्ण कावर्ण्न संक्षेप में किया है–

''शुद्धाश्चछायालयाः प्रोक्ताः संकीर्णाश्च तथैव च।।5।।[3]

रागों की जाति को इस प्रकार स्पष्ट किया है, यथा–पाँच स्वर युग राग 'औडव', छः स्वरों वाले 'षाडव' तथा सात स्वरों से युक्त होने पर वह सम्पूर्ण जाति का राग होगा अर्थात् रागों की जातियों को दामोदर पंडित ने भी तीन भागों में बाँटा हैं–औडव, षाडव एवं सम्पूर्ण।

''औडवः पंचभिः प्रोक्तः स्वरैः षड्भिश्च षाडवः।
सम्पूर्णः सप्तभिर्ज्ञेय एवं रागस्त्रिाधा मतः।।[4]

इसके बाद 20 रागों की संख्या और नामों की गणना की गई है, जिनकी संख्या एवं नाम इस प्रकार हैं–1. श्री, 2. नट्ट, 3. बंगाल, 4. द्वितीय बंगाल, 5. भाष, 6. मध्यम षाडव, 7. रक्तहंस, 8. कोल्हास, 9. प्रभव, 10. भैरव, 11. ध्वनि, 12. मेघ, 13. सोमराग, 14. कामोद, 15. द्वितीय कामोद, 16. कन्दर्प, 17. आम्रपंचम, 18. देशाख्य, 19. कैशिक ककुभ, 20. नट्टनारायण। ये सभी नाम

* UGC NET

शारंगदेव के ग्रामराग, उपराग, राग, भाषा, विभाषा, अन्तरभाषा में से राग शीर्षक के अंतर्गत हैं। इन रागों को शारंगदेव ने उपरागों के बाद ही उत्पन्न माना है। ये राग जातियों से उत्पन्न हैं। सम्भव है इसी कारण से जातियों की चर्चा के बाद जातियों से उत्पन्न बीस रागों का उल्लेख दामोदर पंडित ने किया है।

शिवशक्तिसमायोगाद्राबाणां संभवो भवेत।
पन्चास्यात पंच रागाः स्युः षष्ठस्तु गिरिजामुखात्।।[5]
सद्योवक्रातु श्रीरागो वामदेवाद्वसन्तकः।
अघोराद् भौरवोऽभूत्तत्पुरूषात् पंचमोऽभवत्।।[6]
ईशानाख्यान्मेघरागो नाट्यारंभे शिवादभूत्।
गिरिजाया मूखाल्लास्यै नट्टनारायणोऽभवत्।।[7]

रागों की उत्पत्ति 'शिव तथा शक्ति' इन दोनों के योग से हुई है। महादेव जी के पाँच मुखों में से पाँच राग उत्पन्न हुए और छठा राग पार्वती जी के मुख से निकला। महादेव जी ने जब नाट्य (नृत्य) शुरू किया तो उनके 'संद्योवक्त्रा' नामक मुख में से 'श्री राग' निकला। वामदेव मुख से बसंत निकला। अघोर मुख से भैरव, तत् पुरूष मुख से पंचम और ईशान मुख से मेघराग तथा नृत्य के प्रसंग में पार्वती जी के मुख से नट्टनारायण राग उत्पन्न हुआ।

ग्रन्थकार ने द्वितीय अध्याय में शिवमत के राग–रागिनियों का उल्लेख समय, ऋतु, स्वरूप एवं स्वरों सहित किया है।

शिवमत के छः राग एवं उनकी छः–छः रागिनियों के नाम इस प्रकार हैं–

श्रीरागोऽथ वसंतश्च भैरवः पंचमस्तथा।
मेघरागो वृहन्नाटः षडेते पुरूषाहयाः।।[8]
मालश्री त्रिावणी गौरी केदारी मधुमाधवी।
ततः पहाडिका ज्ञेया श्री रागस्य वरांगना।।[9]
देशी देवगिरि चैव वराटी तोडिका तथा।
ललिता चाऽथ हिन्दोली वसन्तस्य वरांगनाः।।[10]
भैरवी गुर्ज्जरी रामकिरी गुणकिरी तथा।
बंगाली सैंधवी चैव भैरवस्य वरांगनाः।।[11]
विभाषा चाऽथ भूपाली कर्णाटी बडहंसिका।
मालवी पटमंजर्या सहैताः पंचमांगनाः।।[12]
मल्लारी सौरटी चैव सावेरी कौशिकी तथा।
गांधारी हरश्रृंगारा मेघरागस्य योषितः।।[13]
कामोदी चैव कल्याणी अभीरी नाटिका तथा।
सारंगी नट्टहम्बीरा नट्टनारायणागना।।[14]

1. श्री – 1. मालश्री, 2. त्रिावेणी, 3. गौरी, 4. केदारी, 5. मधुमाधवी और 6. पहाड़ी।
2. वसंत – 1. देशी, 2. देवगिरी 3. वराटी, 4. तोड़ी, 5. ललिता और 6. हिंदोल।
3. भैरव – 1. भैरवी, 2. गुर्जरी, 3. रामकिरी, 4. गुणकिरी, 5. बंगाली, और 6. सैंधवी।
4. पंचम – 1. विभाषा, 2. भूपाली, 3. कर्णाटी, 4. बडहंसिका, 5. मालवी और 6. पटमंजरी।
5. मेघ – 1. मल्लारी, 2. सौरटी, 3. सावेरी, 4. कैशिक, 5. गंधारी, और 6. हरश्रृंगारी
6. बृहन्नाट–1. कामोदी 2. कल्याणी, 3. आभीरी, 4. नाटिका (नट्टनारायण) 5. सारंगी और 6. नट्टहंवीरा।

रागों के समय निर्धारण के क्रम में निम्नवत् विवरणी दी गई है–

''मधुमाधवी देशाख्या भूपाली भैरवी तथा
वेलावली च मल्लारी वल्लारी सोमगुर्ज्जरी''।।20।।
घनाश्रीमलिलश्रीश्च मेघरागश्चपंचमः।
देशकारी भैरवश्च ललिता च वसंतकः।
एते रागाः प्रगीयन्ते प्रातरारभ्य नित्यशः।।21।।15

इसे इस प्रकार स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है–

प्रातर्गेय राग–मधुमाधवी, देशाख्य, भूपाली, भैरवी, वेलावली, मल्लारी, वल्लारी, सोमगुर्जरी, धनाश्री, मालवश्री, मेघ, पंचम, देशकारी, भैरव, ललिता और वसन्त ये राग सदैव प्रातःकाल में ही गाए जाते हैं।

प्रथम प्रहर के बाद–गुर्ज्जरी, कौशिक, सावेरी, पटमंजरी, रेवा, गुणकिरी, भैरवी, रामकिरी और सौराटी

द्वितीय प्रहर के बाद–वैराटी, तोड़ी, कामोदी, कुडाई, गांधारी, नागशब्दी तथा विशेषकर देशी और शंकराभरण

तृतीय प्रहर के राग–श्रीराग, मालव, गौरी, त्रिावण, नट्टनारायण, सारंग, नट्ट तथा सर्वनाट, केदारी कर्णाटी, अभीरि, बड़हंस तथा पहाड़ी। (इस प्रहर के राग मध्य रात्रि तक गाये जा सकते हैं।)

रागों के लिए निर्दिष्ट ऋतु भी दर्शाए गए हैं–

शिशिर ऋतु में राग श्री एवं इसकी रागिनियाँ
वसन्त ऋतु में – राग वसंत एवं इसकी रागिनियाँ
ग्रीष्म ऋतु में – राग भैरव एवं इसकी रागिनियाँ

शरद् ऋतु में – राग पंचम एवं इसकी रागिनियाँ
वर्षा ऋतु में – राग मेघ एवं इसकी रागिनियाँ
हेमन्त ऋतु में – राग नारायण एवं इसकी रागिनियाँ

यद्यपि प्रस्तोता की इच्छानुरूप रागों का प्रयोग वर्जित नहीं है।

इस प्रकार दामोदर पंडितकृत संगीत दर्पण के द्वितीय अध्याय में राग की परिभाषा, राग के भेद, राग की जाति, 20 राग के अतिरिक्त, राग–रागिनी वर्णन, के अंतर्गत, शिवमत के राग–रागिनियाँ समय, भाषांग–रागांग उपांग, क्रियांग कंडारणा, ऋतु के वर्णन के बाद हनुमन्त की राग–रागनियाँ, रागार्णव मत से राग–रागनियों के बाद हनुमनन्त के छः राग एवं उनकी रागिनियों के लक्षण एवं ध्यान दिए गए है।

संदर्भः–

1. दामोदर पंडित, संगीत दर्पण, अध्याय– 02, श्लोक–02, पृ0–71
2. मंतग, वृहद्येशी, अध्याय–तृतीय
3. दामोदर पंडित, संगीत दर्पण, अध्याय–2, श्लोक–5
4. वही, पृ0– 72, श्लोक– 6
5. वही, श्लोक–9, पृ0– 73,
6. वही, श्लोक– 10, पृ0–73
7. वही, श्लोक– 11, पृ0–73
8. वहीं, श्लोक–13, पृ0–74
9. वहीं, श्लोक–14, पृ0–74
10. वहीं, श्लोक– 15, पृ0–74
11. वहीं, श्लोक– 16, पृ0– 75
12. वहीं, श्लोक– 17, पृ0–75
13. वहीं, श्लोक– 18, पृ0– 75
14. वहीं, श्लोक– 19, पृ0– 75
15. वहीं, श्लोक– 20, 21 पृ0– 75

*****

परोपकारिता एवं सह अवधारणा

डॉ. संजय कुमार दुबे*

व्यावसायिक व्यवहार, मददगार, साझा करना, बचाव करना, बचाव, दान, सहयोग करना, सहानुभूति आदि आदि विभिन्न शर्तें हैं, जो विभिन्न शब्द हैं, जो परोपकारिता के बहुत करीब और निकट लगते हैं और इसलिए जहाँ तक संभव हो इसे और ज्वलंत बनाना वांछनीय है।

व्यावसायिक व्यवहार को आमतौर पर ऐसे व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो दूसरे को लाभान्वित करता है या उसके सकारात्मक सामाजिक परिणाम होते हैं (स्टाब, 1978रू विस्पे, 1972) अभियोगात्मक शब्द असामाजिक के विपरीत है, जो आक्रामकता पर लागू होता है और अन्य रूप सामाजिक व्यवहार के नकारात्मक रूप हैं। परिणामों के संदर्भ में यह परिभाषा कुछ अपर्याप्त हो सकती है। जैसे–क्या हम अनायास ही प्राथमिक उपचार करते समय किसी दुर्घटना के शिकार व्यक्ति की हालत खराब कर देते हैं, क्या हमने अभियोग तरीके से काम किया है? इसके एवज में किसी का पक्ष लेने के लिए कोई पैसे दे सकता है। यह एक सकारात्मक सामाजिक परिणाम के रूप में कार्य करता है। लेकिन इसे रिश्वत नहीं कहा जायेगा बल्कि यह व्यावसायिक व्यवहार होगा? इस प्रकार, यह उपयोगी है, न केवल एक अधिनियम के परिणाम पर विचार करने के लिए बल्कि उस कार्य के अंतर्निहित उद्देश्यों के लिए भी। अभियोग व्यवहार का सबसे स्पष्ट उदाहरण वे हैं, जो परोपकारी शब्द की योग्यता रखते हैं। विशिष्ट व्यवहार, जिन्हें अभियोजन व्यवहार के रूप में देखा जा सकता है, वे हैं हस्तक्षेप, दान, शिष्टाचार, सहयोग, दान, उपहार, त्रिकोणीय मदद, बचाव, बलिदान, साझा करना और सहानुभूति।

मदद करने की भावना, जैसा कि इसके नामकरण से स्पष्ट है कि किसी अन्य व्यक्ति को कारण की परवाह किए बिना सहायता करना (सेवरी, एट. अल. 1976)। अपने पुरस्कार और लागत और सहायक के इरादे के अनुसार भाग लेने की आवश्यकता नहीं है। परोपकार उस मदद करने की भावना से इन मायनों में अलग होता है, जो जानबूझकर किया जाता है, अर्थात ऐसा इसलिए किया जाता है क्योंकि दूसरे व्यक्ति को इसकी आवश्यकता होती है। इस प्रकार, परोपकार मदद करने का एक विशेष मामला है।

***ग्राम–पुखरेरा, पो0– बिलासपुर, थाना– मैरवा, जिला– सीवान**